

वो धारा थी बह गई

सचिन बिजनौरी
असिस्टेंट मैनेजर (Assistant Manager)
किया इंडिया (Kia India)
गुरुग्राम, हरियाणा, भारत

iitm.sachin@gmail.com

© सचिन बिजनौरी, 2025. All rights reserved.

वो धारा थी बह गई
अपने को खुद में समेटे हुए
वो बस पिघलकर रह गई
वो धारा थी बह गई

मजधारो को बीच में लिए
कोई कश्ती जैसे गुम खड़ी थी
तीर से जैसे सब कह गई
वो धारा थी बह गई

असमजंस में थी थोड़ी व्याकुल
वो नीर भरकर नीर को ही निर्लज कह गयी
वो धारा थी बह गई

बनाकर रास्ते जहाँ पहुँची
लगा अब वो मजिल को पा चली
हो गया विलय पतन का
सागर में सिमट कर रह गई
वो धारा थी बह गई ।